ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

और

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय ज्ञान परंपरा और विज्ञान का दर्शन

28 - 29 अगस्त, 2025

: आयोजन स्थल :

अखिल भारतीय स्वच्छता एवं जन स्वास्थ्य संस्थान

(All India Institute of Hygiene and Public Health)

कक्ष संख्या : 308, 27 बी, जे सी ब्लॉक, सेक्टर-03

साल्ट लेक, कोलकाता- 7000106

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

और

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में

28–29 अगस्त, 2025 को आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

'भारतीय ज्ञान परंपरा और विज्ञान का दर्शन'

पंजीयन की अंतिम तिथि

25.08.2025

पंजीयन लिंक

https://forms.gle/eSpJfyzp37NG7HXy6

28–29 अगस्त, 2025
गुरूवार–शुक्रवार

अखिल भारतीय स्वच्छता एवं जन स्वास्थ्य संस्थान
(All India Institute of Hygiene and Public Health)
कक्ष संख्या : 308, 27 बी, जे सी ब्लॉक, सेक्टर-03,
साल्ट लेक, कोलकाता- 700106

भारतीय ज्ञान परंपरा और विज्ञान का दर्शन

भारतीय ज्ञान परंपरा में सत्य की अवधारणा का अर्थ महज सत और असत में अंतर करना नहीं है या सिर्फ अच्छा या बुरा नहीं है बल्कि सत का अर्थ है, सद का नियम अर्थात अस्तित्व का नियम। विश्व की पूरी व्यवस्था, ब्रह्माण्ड इसी अस्तित्व के नियम से संचालित है, जिसे विज्ञान की भाषा में पारस्परिकता का नियम या सापेक्षता का नियम कहा जाता है। यह पूरी व्यवस्था पारस्परिकता के आधार पर टिकी हुई है और संपूर्ण विश्व इसी व्यवस्था से संचालित हो रहा है । महात्मा गांधी इसे 'सत्य ही ईश्वर है' कहते हैं और यही सत्य, अस्तित्व का नियम है और ईश्वर और सत्य के नियम को अलगाया नहीं जा सकता। विज्ञान और आधुनिक तकनीक भी यही सिद्ध कर चुकी है कि पूरी दुनिया परस्पर संबंध पर ही अवस्थित है। इसी अन्तः संबंध को जहाँ भी क्षति पहुँचती है या यह नियम जहाँ भी खंडित होता है वहां हिंसा आती है, वहां सत्य नष्ट होता है। इसी अस्तित्व के नियम को हमारी सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था में दर्शन की वैज्ञानिक दृष्टि के साथ देखने की जरुरत है।

विज्ञान के क्षेत्र में हो रही खोजों के फलस्वरूप हमारी मानसिक सोच में लगातार बदलाव होते रहते हैं। हम अब तक वस्तु जगत को भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में न्यूटन के नियमों के माध्यम से देखते आये हैं और हमारी आदत स्थिर जगत को देखने की आदी है, जैसे पहाड़ नदियाँ, वृक्ष आदि, यह हमारी मानवीय समझ की सीमा भी है। लेकिन विद्युत चुम्बकत्व और क्वांटम की खोजों के बाद जब हमने जाना कि कणों और परमाणुओं की गति प्रकाश की गति से तेज या उसके समकक्ष है तब इस गति पर दुनिया को देखने और समझने के लिए न्यूटन के नियम और यांत्रिकी नाकाफी साबित हो रहे हैं। ऐसे में सापेक्षता और पारस्परिकता की वैश्विक व्यवस्था को समझने में और उसके अनुसार यथार्थ को समझने में और उसमें मानव की अवस्थिति और उसके कर्तव्यों को समझने में हमें भारतीय ज्ञान परंपरा किस तरह मदद कर सकती है इस पर विमर्श की जरुरत है।

आज हमारे अतीत का और विशेषकर हमारी दार्शनिक परंपराओं का, अध्ययन केवल अमूर्त और शास्त्रीय नहीं है। हमारे देश के अनेक बुद्धिजीवियों ने अनुभव किया है कि एक विश्व-दृष्टि का विकास करना, जो हमारी जनता की सृजनात्मक शक्ति को उत्तेजित करे, उसके जीवन को आत्मविश्वास की एक बलवती भावना और जीवन की उद्देश्यपरता प्रदान करे और भारत के स्पष्ट दर्शन के साथ राष्ट्र निर्माण के क्रिया-कलापों में उसकी पहल को प्रोत्साहित करे, एक मुख्य राष्ट्रीय कर्तव्य बन गया है। ऐसे दृष्टिकोण को तेजी से बदलती दुनिया और वैज्ञानिक खोज की भावना के प्रति सकारात्मक होना है। अतः हमारा ध्येय विभिन्न विचार पद्धतियों के वर्णन और उन मूल्यों के प्रतिपादन तक ही सीमित नहीं होना चाहिए जिन्हें हमने विरासत में पाया है, हमें उन्हें सूक्ष्म निरीक्षण और अनुकूलन की तर्कसंगत विधियों के आधीन करना चाहिए ताकि वे आधुनिक मस्तिष्क के लिए स्वीकार्य हो सकें। यह संगोष्ठी इसी दिशा में एक प्रयास रहेगी।

उप-विषय (Sub-Theme)

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयाम
2. भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्व का विचार
3. भारतीय ज्ञान परंपरा में अमूर्त की समझ का मूर्त विचार
4. हिंसा और अहिंसा के परिप्रेक्ष्य में दर्शन और विज्ञान
5. विज्ञान के दर्शन में हाइपर रियलटी और यथार्थ की समझ की प्रक्रिया
6. विज्ञान का दर्शन और ज्ञान का वर्तमान संकट
7. आधुनिक विज्ञान की दृष्टि में मनुष्य की परिकल्पना
8. पारस्परिकता का दर्शन का विघटन और ज्ञान का संकट
9. विचारकों की दृष्टि में विज्ञान और दर्शन के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण
10. 21वीं सदी में विज्ञान का दर्शन
11. विश्व की अहिंसक व्यवस्थित नैतिक प्रणाली की परिकल्पना
12. आध्यात्मिकता और समाज का अन्तःसंबंध
13. तकनीकी आधारित भ्रम और आध्यात्मिक सत्य

सत्र विभाजन

28 अगस्त 2025

उद्घाटन सत्र

(प्रातः ।।.00 से अपराह्न : 01.00 तक)

भारतीय ज्ञान परंपरा और विज्ञान का दर्शन

भोजन अंतराल

(अपराह्न : 01.00 से 02.00 तक)

प्रथम अकादमिक सत्र

(अपराह्न : 02.00 से 03.30 तक)

भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्व का विचार

द्वितीय अकादमिक सत्र

(अपराह्न : 03.40 से 05.30 तक)

भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति और साहित्य

29 अगस्त 2025

तृतीय अकादमिक सत्र

(प्रातः ।।.00 से अपराह्न : 01.00 तक)

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिकता

भोजन अंतराल

(अपराह्न : 01.00 से 02.00 तक)

चतुर्थ अकादमिक सत्र

(अपराह्न : 02.00 से 04.00 तक)

भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक का विज्ञान

समापन सत्र

(अपराह्न : 04.00 से 05.00 तक)

संरक्षक

प्रो. कुमुद शर्मा

कुलपति

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

आयोजन समिति

डॉ. चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर

डॉ. अभिलाष कुमार गोंड

सहायक प्रोफेसर

डॉ. ऋचा द्विवेदी

अतिथि-अध्यापक

डॉ. आलोक कुमार सिंह

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. अमित राय

एसोसिएट प्रोफेसर

(मो. 9422905719)

शोध–पत्र प्राप्ति की तिथिः	25.08.2025
शोध–पत्र संप्रेषण हेतु ई–मेलः	rckseminar@gmail.com
शोध–पत्र का फॉन्ट :	Kokila (Hindi-16) Times New Roman (Size-12)

ज्ञान शांति मैत्री

आयोजक

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

ऐकतान, आई.ए.-290, सेक्टर-3, सॉल्ट लेक

कोलकाता-700097 (पश्चिम बंगाल)